

आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 26 January, 2022

Website: www.shivbabas.org

धारणा - आज अपने को बार-बार प्रकाश की काया में देखने का अभ्यास करे

आज छब्बीस जनवरी है। हम सभी तपस्वी अब निराकारी स्थिति में स्थित हो जाये। हमारी तपस्या का अंतिम परिणाम है ही कि हम निराकार हो जाये। इसके लिए हमें चलते फिरते यह अभ्यास करना होगा कि ->

" मैं यह देह नहीं हूँ .. मैं तो चैतन्य आत्मा .. चमकती हुई ज्योति .. मास्टर ज्ञान सूर्य .. पवित्रता का सूर्य हूँ .. मैंने तो इस देह में अवतार लिया है "

इससे हमारा चित्त शान्त रहेगा और व्यर्थ संकल्पों से हम सुरक्षित रहेंगे। क्योंकि व्यर्थ संकल्प ही आत्मा को, बुद्धि को, मन को, ब्रेन को बहुत अधिक नुकसान पहुंचा रहे है।

इसके अलावा कर्म हम करे या कुछ भी खाये पीये हमें यह अभ्यास करते चलना है

" मैं फरिश्ता हूँ .. मैं तो ऊपर से फरिश्ता अवतरित हुआ हूँ .. मैं तो प्रकाश के शरीर में हूँ "

कभी अपने को ऊपर देखे, कभी अपने को इस देह में प्रवेश करते हुए मेहसूस करे।

फ़रिश्ते का काम सभी को सकाश देना ही है। क्योंकि हम ऊपर से आये है एक महान कार्य के लिए कि हमें सबको सकाश देना है, सहयोग देना है।

हमारे दुसरो को वायव्रेशन्स देना सबसे बड़ा सहयोग है। बदले में हमें कुछ भी एसपेक्ट नहीं कर सकते। हमारा काम केवल देना है।

संसार के वायुमंडल को पवित्र करना है। मनुष्य आत्माओं के दुःख हरने है। हमें सहयोग देते रहना है। तो चलते फिरते ...

पानी पी रहे है ...

" मैं पवित्रता का फरिश्ता हूँ "

खाते हुए दस बार याद कर ले ...

" मैं पवित्रता का फरिश्ता हूँ "

.... एकसाथ दस बार नहीं, पुरे खाने के समय दस बार याद कर ले

सोने से पहले दस बार याद कर ले .. बाइक चलाते समय दो बार याद कर ले .. बीच बीच में याद करे ...

" मुझसे चारों ओर प्रकाश फैल रहा है "

इससे हमारी बुद्धि देहधारियों में कभी नहीं जायेगी। हमारी दृष्टि आत्मिक हो जायेगी। हम एक महान स्पीचुयल एनर्जी से स्वयं को भरपूर करेंगे।

आत्मिक दृष्टि होने से हम संसार को सकाश देते है। हमारी किरणें चारों ओर फैलने लगती है। तो हम सभी कर्म करते हुए ऐसा श्रेष्ठ अभ्यास करे ...

" कि मानो हम इस दुनिया में है ही नहीं .. हम तो साक्षीद्रष्टा है .. जैसे फरिश्ता ऊपर से आया है और इस संसार को देख रहा है .. कैसी स्थिति है यहाँ कि .. कैसे मनुष्य है यहाँ के .. कैसे आसुरी सम्पदा चारों ओर बढ़ गई है .. कैसे वासनायें विकराल रूप से जागृत हो गई है "

यह सब साक्षी होकर देखे। क्यों ऐसे हो गई? क्यों मनुष्य ऐसा कर रहे है? साक्षीद्रष्टा माना क्यों के कोश्वन्स से सदा मुक्त। बिल्कुल देखनेवाले। न कि उसके चिन्तन करनेवाले।

चिन्तन की भी कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि जो कुछ हो रहा है वही कलियुग के अंत में होना है। इसमें चेंज नहीं किया जा सकता। चेंज करनेवाले तो हम है, बाबा है, जो आज इस युग को भी बदल देंगे।

तो आज सारा दिन हम देखे अपने को प्रकाश की देह में और

" मैं आत्मा प्रकाशमान मस्तक के बीच चमकती हुई ज्योति हूँ "

ऐसा

" मैं फरिश्ता हूँ .. मेरे अंग अंग से प्रकाश फैल रहा है "

यह बहुत अच्छा अभ्यास करेंगे और कभी अभ्यास करेंगे

साक्षी होकर सभी आत्माओं को, मनुष्य को, इस कलयुगी संसार में होनेवाली घटनाओं को देखेंगे और मेहसूस करेंगे

" मेरे मस्तक से प्रकाश की किरणें निकलकर सारे संसार पर पड़ रही है "

इससे बहुत सुखद अनुभूति होगी दुसरोँ को भी हम सहयोग दे सकेंगे।

॥ ओम शान्ति ॥

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org